: पंचम अध्याय :

गोविंद मिश्र के उपन्यासों में चित्रित समाज जीवन की विशेषताएँ

पंचम अध्याय

गोविंद मिश्र के उपन्यासों में चित्रित समाजजीवन की विशेषताएँ

प्रस्तावना

5.1 संयुक्त परिवार ।

5.2 देशप्रेमी समाज ।

5.3 संस्कृति प्रिय समाज ।

5.4 विद्रोही समाज ।

5.5 आत्मनिर्भर साहसी नारी ।

5.6 महत्वाकांक्षी युवा वर्ग ।

5.7 समलिंगी आकर्षण ।

5.8 वात्सल्यमयी, कलाप्रेमी वेश्या ।

निष्कर्ष

प्रस्तावना :-

व्यक्तियों से मिलकर ही समाज बनता हैं। अलगता में ही एकता बनकर व्यक्ति समाज में अपना अस्तित्त्व बनाता है। जो समाज जीवन की विशेषता बन जाती है। इस तरह हर समाज की अपनी विशेषता होती है। इस विशेषता के जरिए हम समाज को सूक्ष्मता से जान सकते हैं - जैसे एक सिक्के की दो बाजू होती हैं। वैसे ही कुछ विशेषताएँ उस समाज के लिए कौतुकास्पद होती हैं, तो कुछ विशेषताएँ घृणास्पद होती हैं। मिश्र जी एक सामाजिक लेखक होने के कारण उन्होंने समाज का कोना-कोना छान कर उसकी विशेषताओं को उपन्यासों द्वारा पाठकों के सम्मुख रखा है। उनके उपन्यासों में चित्रित समाज जीवन की विशेषताएँ निम्न प्रकार से हैं -

5.1 संयुक्त परिवार :-

भारतीय संस्कृति में संयुक्त परिवार का प्रचलन है। लेकिन अंग्रेजों के आगमन से औद्योगिक विकास हुआ। अत: शहरीकरण के कारण लोग शहर की ओर आकर्षित हो गए। और उन्हें आर्थिक विपन्नता के कारण अपना ही पेट भरना मुश्किल हो गया। परिणामत: एकल परिवार का निर्माण और संयुक्त परिवार का विघटन हुआ ऐसी जटिल स्थिति में किसी परिवार का संयुक्त बना रहना समाज जीवन की विशेषता ही है।

'लाल पीली जमीन' उपन्यास में जादवों का परिवार संयुक्त दिखाया है। बड़े जादव जी मंझले डाक्टर तो छोटे कनफ़ट्टे ऐसे तीनों भाई और उनके परिवार मिल-जुलकर रहते हैं। घर में कोई उत्सव, विवाह होता है तो पूरे मुहल्ले को सजाया जाता है। अलग-अलग मिठाइयाँ बनाई जाती हैं। इस तरह पूरा परिवार धर्म तथा संस्कृति को माननेवाला है। जो आज बहुत कम मात्रा में दिखाई देता है।

'पाँच आँगनोवाला घर' उपन्यास में भी जोगेश्वरी देवी का परिवार संयुक्त दिखाई देता है। जो एक मोहल्लानुमा परिवार है। जिसमें जोगेश्वरी देवी के चार बेटे तथा चचरे भाई और इन सब के बच्चे मिलकर रहते हैं। लेखक लिखते हैं - "उस लम्बें चौड़ें घर में राजन के चचेरे भाई-बहन और उनके परिवार भी रहते हैं।"[1] इस तरह यह परिवार बहुत बड़ा है। इस घर में पाँच आँगन हैं - जैसे गणेश जी, बेल वाला कालीजी, हनुमान जी तथा फाटकवाला। इस तरह यह घर एक मंदिर जैसा ही है। जिसमें जोगेश्वरी घर की मुखिया हैं लेकिन बड़े बेटे राधेलाल जी काम में जोगेश्वरी देवी का हाथ बँटाते हैं जिसके कारण आगे वे ही घर का मुखिया बनते हैं। बाकी दोनों भाइयों की राधेलाल जैसी ज्यादा कमाई तो नहीं है। लेकिन जो भी पैसे मिलते हैं वह जोगेश्वरी के पास ला कर देते हैं और जोगेश्वरी देवी जरूरतों के नुसार हर एक को देती हैं। पूरे घर की जिम्मेदारी जोगेश्वरी देवी सँभालती है। घर में हर रोज सौं-सौं आदमियों का खाना पकाना पड़ता है। उसकी व्यवस्था जोगेश्वरी ही करती है। आते-जाते मेहमानों की व्यवस्था, घर के सदस्यों की जरूरतें आदि का खयाल एक कुशल मॅनेजर की तरह रखती है। इस तरह उस संयुक्त परिवार में हर एक की जरूरत पूरी की जाती है और मुशायरा, मुजरा, कवि सम्मेलन और

रामलीला, नौटंकी तथा संक्रांति आदि उत्सव मनाएँ जाते हैं। इस परिवार को संस्कृति को आगे बढ़ानेवाला परिवार ही माना जाना चाहिए।

मिश्र जी ने संयुक्त परिवार के रूप में एक आदर्श परिवार को चित्रित किया है जो इस संक्रांति युग में विशेष महत्त्व रखता है।

5.2 देशप्रेमी समाज :-

हमारे देश पर परकीय आक्रमण होते रहे हैं। जिसका मुख्य कारण कुछ स्वार्थी लोग , जो अपने फायदे के लिए देश को दुश्मनों के हाथों बेचते हैं। परिणामत: दुश्मन ने इसी मौके का फायदा उठाकर अपना साम्राज्य विस्तार किया और देश को गुलाम बनाया। जिससे अन्याय/अत्याचार, बढ़कर निष्पाप लोगों की जाने चली गई। इस तरह इस संक्रांति युग में देश के लिए प्रेम महसूस करना एक विशेष बात है। मिश्र जी ने ऐसे देशप्रेमी लोगों का 'पाँच आँगनोवाला घर' उपन्यास में यथातथ्य वर्णन किया है।

इस उपन्यास के ज्यादातर पात्रों ने गांधी, नेहरू जैसे स्वतंत्रता के हिमायती लोगों का अनुकरण किया हैं - जैसे राधेलाल, गोवर्धन चाचा ऐसे और भी कई पात्र हैं जो देशप्रेमी हैं। राधेलाल घर के मुखिया होकर भी सब कुछ त्याग कर सुराजी बन जाते हैं। संसार में ऐयाशी करने के बजाय आज़ादी के लिए लड़ना वे पसंद करते हैं क्योंकि वे समझते हैं कि,

''देश भी हमारा ही घर है हमारा बड़ा घर, वहाँ जो हो रहा है उसे अनदेखा हम नहीं कर सकते उससे जुड़कर ही हम इस छोटे घर के हो सकते हैं। सच्ची तृप्ति हमें देशप्रेम से ही मिल सकती है।''[2] इस तरह का देशप्रेम देखकर राधेलाल की माँ आश्चर्यचकित होती है। राधेलाल का बेटा राजन उसके मन में भी देशप्रेम की ज्योति दिखाई देती है। देशभक्ति की कविता स्कूल में सुनाने से राजन के हैड़मास्टर स्मिथ उसे बहुत मारते हैं। उस पर हुआ अन्याय वह पिता को नहीं बताता। सर तो पीटाई करते हैं, यह झूठा कारण बताता है और बात को बढ़ाता नहीं है। इस तरह राजन जैसे छोटे बच्चे के मन में भी देशप्रेम दिखाई देता है।

सन 1940 ई में प्रांतीय स्टूडेंडस फेडरेशन का सम्मेलन, छात्रों के जुलूस, नारेबाजी, बड़े-बड़े प्रोफेसर, तथा अन्य हस्तियों का गिरफ़्तार होना, अंग्रेजों का जुलूस पर गोलियाँ झाड़ना, कई छात्रों के प्राण जाना आदि की तरह देशप्रेमी वर्ग अपना जीवन देश को समर्पित करता हुआ दिखाई देता है। गोवर्धन चाचा और रामाधार दोनों गांधीजी के भक्त हैं। वे गांधीजी को सब कुछ मानकर उनके नुसार चलते हैं। गोवर्धन चाचा राधेलाल को स्वतंत्रता की खुफ़ियाँ बात बताते रहते हैं। हेड़ मास्टर स्मिथ जो एक अंग्रेज होने के बावजूद राजन की दिखावे के लिए पीटाई करते हैं और मुंशी राधेलाल को अंडरग्राऊंड होने की सूचना देते हैं। इसी तरह राधे उसी वक्त अपने बाल-बच्चे, घर छोड़कर सुराजी बनते हैं। यहाँ स्मिथ अंग्रेजों के बर्ताव से असंतुष्ट हैं। वह भारतीयों की मदद करके भारत के लिए सहानुभूति पूर्वक देशप्रेम दिखाते हैं। राधेलाल देश के लिए दौड़-धूप

करने से बीमार हो जाते हैं। इस तरह देश के स्वतंत्रता प्रेमी का करूण अंत होता हुआ दिखाई देता है।

सन्नी चाचा भी देशप्रेमी हैं। वे पत्रकारों में जागृती लाना चाहते हैं। इसी वहज से वह आपातकालीन स्थिति में दो बार जेल भी गए। यहाँ सन्नी जन-जागृती कर देश की सेवा कर रहे हैं। आगे भतीजा मोहन भी अवकाश प्राप्ति के बाद देश के लिए कुछ करने की इच्छा रखता है और इसी कारण वह सन्नी चाचा के काम में थोड़ी बहुत मदद करता है।

मिश्र जी ने उपन्यास के कुछ पात्रों को समाज में स्थित देशप्रेमी लोगों का प्रतिनिधि बनाकर प्रस्तुत किया है। जो आदर्श समाज के लिए गर्व की बात है।

5.3 संस्कृतिप्रिय समाज :-

संस्कृति ही मनुष्य को जीवन जीने का सलीका सीखाती है, जिसके कारण मनुष्य परिपूर्ण बनकर अपना व्यक्तित्व बनाता है। भारतीय संस्कृति आदर्श संस्कृति मानी गई है। जिसमें उत्सव, पर्व, त्यौहार, खेल, मनोरंजन, शौक आदि सम्मिलित हैं। मिश्र जी ने अपने उपन्यासों में संस्कृतिप्रिय समाज को नजर अंदाज नहीं किया है, बल्कि उसे एक विशेषता बनाकर पाठकों के सामने रखा है।

'वह अपना चेहरा' उपन्यास की रचना और शुक्ला ट्रेनिंग कॉलेज से उत्साह के साथ ड्रामा में काम करते हैं। कुछ दिनों बाद दोनों के तबादले दिल्ली शहर में होते हैं और दोनों भी खुश है क्योंकि आए दिन दिल्ली में सांस्कृतिक कार्यक्रम होते रहते हैं। अत: दोनों उन कार्यक्रमों का आनंद उठा सकते हैं। मिसेस केशवदास आधुनिक साहित्य, आधुनिक चित्रकारी और केशवदास भी मुशायरों में दिलचस्पी रखता है। शुक्ला भी मुशायरा, शायरी की चर्चा केशवदास के साथ आराम से करता है। इस तरह कलाप्रेमी लोग संस्कृति को बढ़ावा देते हुए दिखाई देते हैं।

'लाल पीली जमीन' उपन्यास में खांदिया मुहल्ले के लोग उत्सव, पर्व, त्यौहार बड़े जोश के साथ मनातें हैं। वहाँ मृतिका पूजन विवाह और छेईमाटी के दिन होता है। मुहल्ले के मंदिर में रोज आरती होती है जहाँ बच्चे-बड़े रोज नियमानुसार उपस्थित रहते हैं। कृष्ण जन्माष्टमी की झाँकिया बड़े उत्साह से मनाते हैं। नौरता के त्यौहार में पत्थरों को रंगाना आदि तरह-तरह के कार्य किए जाते हैं। लेखक लिखते हैं -

''मामुलिया और नौरता त्यौहारों पर छबी न केवल जादव जी के घर बल्कि पूरे मुहल्ले में छायी होती।''[3] इस तरह छबी जैसी मुहल्ले की लड़कियाँ पूरे त्यौहार में उत्साह से भाग लेती हैं। नौरता त्यौहार के साथ दीवाली के वक्त मोहल्ला झूम उठता है, कौड़ी, ताश खेले जाते हैं। होली का त्यौहार हफ्ते भर मनाया जाता और रात भर फाग के गाने गाए जाते हैं। दशहरा, होली में लोग अपने दुश्मन के भी गले लगते हैं। गोवर्धनधारी मेले में सर्कस का खास आकर्षण रहता है। कुस्ती, तीतर लड़ाना आदि बड़ों के मनोरंजनात्मक खेल खेले जाते हैं तथा बच्चें गुल्ली-डंड़ा, लुका-छिपी, चियों का खेल आदि खेल खेलते हैं। इस तरह के

मुहल्ले में संस्कृतिप्रिय लोग दिखाई देते हैं।

'तुम्हारी रोशनी में' उपन्यास की सुवर्णा बच्चों को मेला दिखाने लिए ले जाती है। वहाँ सर्कस भी होती है। वह और बच्चें मेला और सर्कस का आनंद उठाते हुए दिखाई देते हैं। सुवर्णा जन्म-दिन बड़े उत्साह से मनाती है। इस तरह आज लोगों में संस्कृति का कुछ अंश दिखाई देता है।

'पाँच आँगनोवाला घर' उपन्यास में लोगों का पंचगंगा घाट पर स्नान के लिए जाना जैसे - जोगेश्वरी, राजन अन्य औरतें, साधू लोग आदि तथा 'पाँच आँगनोवाला घर' में मुशायरा, कवि सम्मेलन, मुजरा, रामलीला खेलना, बच्चों को हनुमान चालीसा पढ़ाना आदि संस्कृतिजन्य कार्यक्रम चलते रहते हैं। और घर के बड़े-बूढ़े , औरतें, बच्चें, जवान सब शामिल होते हैं। घर में शादीयाँ भी जोर-शोर से बाजे गाजे के साथ मनाई जाती है और सुहागरात के लिए कोठी सजाने की प्रथा भी इस घर में है। अत: उस घर में संस्कृति नुसार हर कार्य किए जाते हैं।

इस तरह मिश्र जी ने अपने उपन्यासों में संस्कृतिप्रिय समाज को दिखाकर भारतीय संस्कृति का दर्शन कराया है।

5.4 विद्रोही समाज :-

जब अन्याय की मात्रा बढ़ जाती है तब विद्रोह का जन्म होता है। आधुनिक काल में शिक्षा प्रसार, आधुनिकीकरण से मनुष्य अपना अधिकार मांगने के लिए कभी-कभी विद्रोह का सहारा लेता है। मिश्र जी ने समाज की विद्रोह वृत्ति को अपने उपन्यासों द्वारा सामने रखा है।

'लाल पीली जमीन' उपन्यास में छात्रों के प्रिय मास्टर कंठी को प्रिंसिपल न बनाएँ जाने के कारण छात्र आंदोलन करके विद्रोही युवकों का प्रतिनिधित्त्व करते हैं। सुरेश जैसा युवक गुंड़ागर्दी, बलात्कार करके विद्रोही युवक के रूप में सामने आता है। ड्राईंग मास्टर और भारत भी विद्रोह को निर्माण करते हैं। मुहल्ले में हर कोई पार्टी बनाना चाहता है और अपनी धाक बढ़ाना चाहता है, जैसे- शिवमंगल, कल्लु, सुरेश। उपन्यास की विधवा शन्नो भी विद्रोही नारी के रूप में दिखाई देती है, जैसे लखोटिया और उसके संबंध की चर्चा के कारण वह केशव की माँ के साथ झगड़ा करती है। इस तरह शन्नो नीड़र है। वह अपने संबंधों को छुपाती नहीं हैं।

'तुम्हारी रोशनी में' सुवर्णा विद्रोही नारी का प्रतिनिधित्त्व करती है। वह पति की बंदिश में न रहकर अपना अलग अस्तित्त्व निर्माण करना चाहती है। इसलिए वह पति रमेश से अलग रहती है।

'पाँच आँगनोवाला घर' उपन्यास में बनारस हिंदू युनिवर्सिटी के छात्रों का तथा अन्य बड़े नेताओं का अंग्रेजों के खिलाफ आंदोलन चलना आदि विद्रोह ही है। छोटू शराब पीकर अपने माँ-बाप तथा पत्नी के प्रति विद्रोह करता है। छोटू अपने माँ-बाप के बारे में कुछ इस तरह सोचता है - ''बड़ी-बड़ी बातें करते हैं ये लोग, मूल्यों की आदर्श की, लेकिन भीतर से कुछ, बाहर से कुछ। बाहर का शो चलते रहना चाहिए, भीतर कुछ भी

होता रहे। कितने दिखावी । छोटे जो भीतर है वही बाहर होगा, कुछ और हो नहीं सकता।''[4]

छोटू अपने विद्रोह को दबा नहीं सकता और आखिर वह पत्नी से तलाक लेता है। आगे वह स्वच्छंद मुक्त जीवन जीता है।

सन 1990 ई. में भूतपूर्व प्रधानमंत्री ने अल्पमत में आयी सरकार को बचाने के लिए पिछड़ी जाति तथा हरिजनों को नौकरी में आरक्षण रखा जिसकी प्रतिक्रिया में देश के छात्रों ने आंदोलन छेड़ा। उसमें छात्रों के आत्मदाह जैसे भयावह प्रकार शुरू हुए। यहाँ छात्र सरकार के प्रति अपना विद्रोह आत्मदाह, तोड़फोड़ के रूप में प्रकट करते हैं। इस तरह यहाँ भ्रष्ट राजनीति विद्रोह को जन्म देती हैं।

मिश्र जी ने समाज जीवन में चलते विद्रोह का यथार्थ वर्णन कर विद्रोही वृत्ति के कारणों को स्पष्ट किया है।

5.6 महत्त्वाकांक्षी युवावर्ग :-

युवा देश का भविष्य हैं। अत: वे अपनी महत्त्वाकांक्षा के जरिए आगे बढ़ते हैं, और देश की प्रगति में अपना हाथ बँटाते हैं। आज कुछ युवा गलत दिशा दर्शन तथा कूटनीति के कारण विद्रोह के रास्ते पर चलते दिखाई देते हैं। कुछ मेहनती युवा अपनी महत्त्वाकांक्षा, अपने सपनों के साथ अपना व्यक्तित्व बनाते हैं। मिश्र जी ने महत्त्वाकांक्षी युवाओं को उपन्यास की आत्मा बनाकर प्रस्तुत किया है।

'वह अपना चेहरा' उपन्यास की रेश्मा कम्पीटिशन में बैठकर एक उच्च श्रेणी का अफ़सर बनना चाहती है। मि.शुक्ला उसे मार्गदर्शन करते हैं। इस महत्त्वाकांक्षा के कारण वह आम लड़कियों की तरह शादी के बारे में नहीं सोचती। 'लाल पीली जमीन' उपन्यास की शांति एक महत्त्वाकांक्षी कस्बाई युवती है। वह प्राइमरी स्कूल में पढ़ाती है। इस तरह आर्थिक रूप से वह अपने पैरों पर खड़ी होकर अपना परिवार चलाती है। शैलजा भी अपनी पढ़ाई जोरों से करती है। केशव, बड़े, कैलाश यह युवक मास्टर कंठी, मास्टर कौशल के मार्गदर्शन में अपनी पढ़ाई नियमा नुसार मेहनत से करते हैं। बड़े एक गरीब घर का लड़का है, उसे घर की जिम्मेदारी का अहसास है। इसी कारण वह भी मन लगाकर पढ़ाई करता है। लेखक बड़े की महत्त्वाकांक्षा को इस तरह स्पष्ट करते हैं -

''वह बड़ा था .... इस वर्ष फायनल करके वहीं अध्यापकी कर लेगा फिर भाईयों को पढ़ाता आएगा और खुद प्राईवेट बी.ए., एम्.ए. करने के बाद ही किसी लायक हो सकेगा।''[5] इसी महत्त्वाकांक्षा के कारण वह प्रिया शांति की आत्महत्या का धक्का दिल पर पत्थर रखकर सहता है और पढ़ाई पर ध्यान देता है।

'पाँच आँगनोवाला घर' उपन्यास में हिंदू बनारस युनिवर्सिटी के छात्र देश की आज़ादी के लिए आंदोलन, संघर्ष कर, स्वतंत्रता प्राप्ति की महत्त्वाकांक्षा को पूरा करने का प्रयत्न करते हैं। छात्रों ने सन 1990 ई.

में नौकरी में पिछड़ी जातियों के लिए आरक्षण बढ़ाने की सरकार की कूटनीति के खिलाफ विद्रोह प्रदर्शन कर अपनी महत्त्वाकांक्षा, प्रगति के बीच आनेवाली अड़चनें दूर करने का प्रयत्न करते हैं। उपन्यास का अन्य पात्र 'बन्टू' उसकी भी विदेश जाने की महत्त्वाकांक्षा है। अत: वह जल्दी ही इंजिनिअरिंग की पढ़ाई पूरी करके विदेश जाना चाहता है। इसीलिए वह अमेरिकन लड़की एलिस के साथ शादी करता है और उसकी मदत से अमेरिका जाता है। बन्टू उन महत्त्वाकांक्षी युवाओं का प्रतिनिधित्त्व करता है जो अपनी महत्त्वाकांक्षा पूर्ण करने के लिए समझौतें करते हैं।

मिश्र जी ने महत्त्वाकांक्षी युवाओं को चित्रित कर, उनका संघर्ष, आत्मविश्वास मेहनत आदि को स्पष्ट किया है।

5.5 आत्मनिर्भर - साहसी नारी :-

प्राचीन युग से नारी के आदर्शमयी रूप जैसे - माता, बहन, पत्नी, सखी, गुरू आदि हम देखते आए हैं। लेकिन कुछ अज्ञानी, अहमी पुरुष, तथा कुछ स्वार्थी नारियाँ आदि उपर्युक्त रूप को भूलकर उसका शोषण करते हैं। लेकिन आधुनिक काल की सुधारित स्थिति के कारण कुछ मात्रा में नारियों की दयनीय स्थिति में बदल हुआ हैं। अत: नारी आत्मनिर्मर, साहसी, कामकाजी, शिक्षित बनकर अपनी उन्नति की कगार तक पहुँची है। नारी समाज का महत्त्वपूर्ण अंग है। इसीलिए नारी की यह सुधारित स्थिति समाज के लिए विशेष बात है। हिंदी साहित्यकारों ने नारी की दयनीय स्थिति के साथ सुधारित स्थिति का यथातथ्य वर्णन किया है। इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए मिश्र जी ने अपने उपन्यासों की नारियों को आत्मनिर्भर, साहसी, कामकाजी, शिक्षित रूप में दिखाया है।

'वह अपना चेहरा' उपन्यास की मिस रचना अजवाणी आत्मविश्वासी, शिक्षित कामकाजी नारी का प्रतिनिधित्त्व करती है। मि.शुक्ला उसे ट्रेनिंग के दौरान से जानता है। रचना सभी क्षेत्र में अपने आपको ऊँचा रखती है। वह ड्रामों में काम करती है। सांस्कृतिक कार्यक्रम को उत्साह से देखती है। उसमें एक अजीब एहसास है जो हर एक पुरुष उसकी ओर आकर्षित होता है। वह प्रशासन में उच्चपद पर काम करती है। अत: वह सरकारी माहौल के नुसार अपने आपको बनाती है और पदोन्नति पाती हुई आगे बढ़ती है। समाज की कड़ुवी बातों को अनसूना कर साहस के साथ जिंदगी बिताती है। शुक्ला उसके बारे में सोचता है - ''वह किसी भी दौड़ में पीछे छूटनेवाली नहीं थी...... हर इंच एक अफ़सर .... आखिर क्यों नहीं।''[6] इस तरह रचना उन आधुनिक नारियों का प्रतिनिधित्त्व करती हैं जो नौकरी पेशा, साहसी हैं और अपने करिअर को महत्त्व देती है।

'लाल पीली जमीन' उपन्यास में मिश्र जी ने कस्बाई क्षेत्र की आत्मविश्वासी, निर्भिक, कामकाजी नारियों को चित्रित किया है। जैसे केशव की माँ, शन्नो, शांति। केशव की माँ स्कूल में पढ़ाती है, वह निर्भिक है,

जब मुहल्लेवाले उसके परिवार को त्रस्त करते हैं तब वह कहती है -

''मैं कल खुद जाकर उनकी रिपोर्ट लिखाऊँगी । सरकारी आदमी होकर ऐसा करते हैं।''[7] इस तरह केशव की माँ साहस से अपने परिवार पर होने अन्याय का बदला लेने के लिए पुलिस के पास जाने से नहीं डरती। शन्नो भी निर्भिक है, वह अस्पताल में दाई का काम करती है। जब उसके अनैतिक संबंध की चर्चा मुहल्ले में होती है तब वह मुहल्ले में केशव की माँ के साथ झगड़ा करती है और निर्भिकता से लखोटियाँ से संबंध रखती है। शांति पिता की मृत्यु के बाद घर की जम्मेदारी खुद पर लेती है। पहले-पहले वह मुहल्ले के गुड़ों से ड़रती थी लेकिन कुछ दिन बाद वह निड़रता से आगे बढ़ती है। लेखक शांति पर इस तरह टिप्पणी करते हैं -

''ईश्वर से रास्ते भर मनाती रहती कि कोई न मिल जाए पर धीरे-धीरे वह सख्त हो गई।''[8] शांति के सख्त होने से वह बड़े के साथ प्रेम करने का धाड़स करती है जो आम कस्बाई लड़कियाँ नहीं करती हैं।

'तुम्हारी रोशनी में' उपन्यास की नायिका सुवर्णा चौधरी सरकारी अफ़सर है। उस पर पाश्चात्य जीवन का प्रभाव है। वह खुद को किसी की पर्सनल प्रॉपर्टी नहीं बनने देती । वह सुंदर, बुद्धिमानी नारी है, अनंत सुवर्णा के बारे में कहता है -

''यह पहली मर्तबा नहीं था जब वह मुझे बुद्धिमानी लगी .... लेकिन यह पहली बार महसूस हो रहा था कि बुद्धि उसकी सुंदरता का कितना बड़ा हिस्सा थी।''[9]

इस तरह सुवर्णा का अपना अलग व्यक्तित्व , अलग मन है जिसके नुसार वह चलती है। अत: वह पति रमेश के बंदिश लगाने पर उससे अलग रहती है और अपने मित्रों के साथ खुलेपन का व्यवहार करती है। सुवर्णा की तरह आज की नारी अपने अलग व्यक्तित्व के कारण पुरूषों से समानाधिकार की माँग कर रही हैं।

नारी में आत्मविश्वास होना अत्यंत जरूरी है, जिससे वह अपने परिवार पर आए मुसिबतों का सामना कर सकती है। 'पाँच आँगनोवाला घर' उपन्यास की जोगेश्वरी देवी पति मरने के बाद घर की जिम्मेदारी सँभालती है। घर के काम हर व्यक्ति को ठीक तरह से समझाकर उनसे करवा लेती है। इसीलिए लेखक उसे कुशल बैंक मैनेजर कहते हैं। राधेलाल के सुराजी बनने के बाद घर की हालत बिगड़ जाती है। फिर भी जोगेश्वरी आत्मविश्वास के साथ घर चलाकर अपनी जिम्मेदारी निभाती है। राधेलाल की मृत्यु के बाद वह खुद सब विधि संस्कार का इंतजाम करती है। लेकिन रोती नहीं है। बहु जोगेश्वरी से इस तरह के बर्ताव पर आपत्ति उठाती है, तो जोगेश्वरी उसे समझाती है। अगर वह भी रोती रहेगी तो बच्चों और उसे (बहू को) कौन सँभालेगा इस तरह जोगेश्वरी सबको ढाँढ़स बंधाती है। लेखक कहते हैं -

''परिवार का एक बड़ा वृक्ष ढह गया था तो दूसरे बड़े वृक्ष को खड़े रहना था।''[10]

मिश्र जी ने नारी का आत्मनिर्भर, साहसी, आत्मविश्वासी, कामकाजी रूप पाठकों के सामने रखा है जो सभ्य समाज की विशेषता है।

5.7 समलिंगी आकर्षण :-

पहले समलिंगी आकर्षण समाज में कम मात्रा में पाया जाता था। आज छोटों से लेकर बड़ों तक यह समलिंगी आकर्षण बढ़ता ही जा रहा है। इस आकर्षण के पीछे मनुष्य के मन का मनोविज्ञान है। मिश्र जी इस अजीब वृत्ति को अपने उपन्यासों द्वारा स्पष्ट करते हैं जो समाज की एक विशेषता है।

'लाल पीली जमीन' उपन्यास में खांदियाँ मुहल्ले के स्कूल के नवजवानों में समलिंगी आकर्षण दिखाई देता है। इस मुहल्ले का सुरेश जो एक आवारा लड़का है वह मुहल्ले के अन्य लड़कों को अपनी तरफ खींचने की कोशिश करता है। वह केशव से कहता है - ''क्यों बे कब फँसेगा चल कुइयाँवाले मंदिर में कसम से कोई नहीं देखेगा।'' [11] यहाँ बड़े लड़के छोटे लड़कों को फँसाने में अपनी शान समझते हैं। केशव स्कूल के इंटरवल में मित्र अब्दुल राई के घर जाता है। लौटते वक्त मास्टर सत्यपाल उन दोनों को देखते हैं और मास्टर के मन में यह शक पैदा होता है कि उन दोनों में समलिंगी संबंध है। लेखक लिखते हैं -

''मास्टर सत्यपाल का शक वाजिब था, जहाँ तक वह शक था ...... क्योंकि स्कूल का माहौल ही कुछ वैसा था। इंटरवल या क्लास के बाहर अक्सर छोटे-छोटे लड़कों में अजीब हरकतें देखी जाती थी .... एक बड़ा सा लड़का किसी चिकने लौंड़े से एकाएक जाकर चिपट जाता
और उसे चूम लेता था। कोई पीछे से चिपटकर जकड़ लेता। ये बहादूरी की बातें समझी जाती थीं।''[12]

क्लास के अन्य लड़के जैसे अशरफ और माथूर में समलिंगी आकर्षण दिखाई देता है। एक दिन क्लास में दोनों पसीने से तर होकर आते हैं और माथूर का बर्ताव कुछ संकोच भरा होता है। परिणामत: क्लास के सब लड़के उन दोनों को शक भरी नजर से देखते हैं। आखिर एक दिन दोनों के झगड़े में यह बात खुल जाती है कि दोनों में समलिंगी संबंध थे। आज भी कुछ मात्रा में यह समस्या दिखाई देती हैं।

''पाँच आँगनोवाला घर'' उपन्यास में तवायफ कमलाबाई शांतिदेवी की ओर आकर्षित है। वह शांतिदेवी से अपने मन की बात कहने में संकोच नहीं करती। कमलाबाई को यह आश्चर्य सा लगता है कि वह शांतिदेवी की तरफ इतनी आकर्षिक कैसी हुई। लेखक इस पर टिप्पणी करते हैं - ''भीतर कसमसाता प्यार जाकर गिरता है किसी शांतिदेवी जैसी महिला पर तो कम्मो अचकचाकर सोचने लगती है कि कहीं कुछ उल्टा-सीधा तो नहीं है उनके साथ कि जो लड़की होकर लड़की को ही चाहती है।''[13]

आज समाज में स्त्री-स्त्री में समलिंगी आकर्षण दिखाई देता है। यहाँ कमलाबाई का अकेलापन ही उसे शांतिदेवी की तरफ खींच ले गया है।

समलिंगी आकर्षण आज एक समस्या बनती हुई दिखाई देती है। ऐसी वृत्ति का केशव जैसे नवयुवक पर बुरा असर पड़ता है और वह खुद को इस माहौल में अकेला महसूस करता है। मिश्र जी ने समलिंगी आकर्षण का चित्रण कर समाज की यथार्थ परिस्थिति पाठकों के सामने रखी है।

5.8 वात्सल्यमयी, कलाप्रेमी वेश्या :-

आज समाज में वेश्या को अच्छी नजर से नहीं देखा जाता है। अत: अच्छी वेश्याएँ भी बुरी कहलाई गई है। कुछ हिंदी साहित्यकारों ने वेश्या के घृणित रूप को न देखकर उसके वात्सल्यमयी, कलाप्रेमी रूप को प्रस्तुत किया है। जिससे उनकी मानवतावादी चेतना स्पष्ट होती हैं। मिश्र जी मानवतावादी लेखक होने से उन्होंने समाज का कोना-कोना छान मारा है और समाज के हर स्तर के व्यक्ति को उपन्यास में शामिल किया है। चाहे वह वेश्या ही क्यों न हो। मिश्र जी ने 'पाँच आँगनोवाला घर' उपन्यास में स्वतंत्रता पूर्व समाज की वेश्या का वर्णन कर आज की वेश्या और उस वक्त की वेश्या में मिलनेवाला अंतर हमारे सामने रखा है।

गायिका कमलाबाई एक सुंदर तवायफ है। जोगेश्वरी देवी का दावतनामा मिलने से वह 'पाँच आँगनोवाला घर' में मुजरा सुनाने को आती है। वह घर में आते ही पहले औरतों के साथ गप्पे हाँकती है, खासकर मुन्शी राधेलाल की पत्नी शांतिदेवी के साथ आत्मीयता से बातचीत करती है -

''सब औरते लाड़ से कमलाबाई की तरफ देखने लगी। क्या औरत है ..... आई बैठी, और जैसे सबको अपने आँचल में बाँध चली। ऐसी मोहनी .... कितनी जल्दी मोह लिया सबको, एकदम जैसे घर की हो गई।''[14] इस तरह कमलाबाई उस घर के माहौल में घुल-मिलकर चलती है जैसे की वह वेश्या नहीं, घर की कोई सदस्य ही हैं।

मुन्शी राधेलाल जब सुराजी हो जाते हैं, तब उनका परिवार आर्थिक विपन्नता का सामना करता है तब कमलाबाई शांति के परिवार को कुछ पैसे देकर मदद करती है। राधेलाल के देशप्रेम को देखकर कमलाबाई के मन में उनके लिए आदरयुक्त प्रेम निर्माण होता है। वह अपनी वात्सल्यमयी भावना न छुपाकर राधेलाल के परिवार को मदद करती है। शांति जब मना करती है तब कमलाबाई उसे कहती है - ''भौजी, मेरी भी तो तुम कुछ लगती हो। अच्छा, समझ लो मुंशी जी के हैं या वे जब आएँगे तब वापस ले लूँगी। बस, अब और जिरह नहीं।''[15] आम वेश्या अपनी वात्सल्यमयी भावना को दबाकर ही रखती है लेकिन कमलाबाई अपनी वात्सल्यमयता को शांति के परिवार पर बिखेर देती है।

कमलाबाई कला की प्रेमी है वह शरीर नहीं बेचती है। अपनी कला, हुनर, बेचकर पेट पालती है। लोगों का कला के जरिए मनोरंजन करना उसे बुरा काम नहीं लगता। इस तरह वह एक अनुशासन से जिंदगी बिताती है। जब वह एक विवाहित आदमी के लिए प्यार महसूस करने लगती है तब वह उसके परिवार का विचार करती है। वह सोचती है उन दोनों के मिलने से उसके परिवार में आग लग जाएगी। इसी कारण वह खुद उस विवाहित आदमी से दूर हो जाती है। इस तरह यहाँ भी वह अपना वात्सल्यमयी रूप दिखाकर अपने दिल पर पत्थर रखकर सारी जिंदगी अकेली मन मारकर रहती है।

मुंशी राधेलाल के जमाई का वेश्या पर पैसे उछालना कमलाबाई को अच्छा नहीं लगता। वह उसे अपना दामाद समझ कर कोठों पर आने के लिए मना करती है और समझाकर घर वापस भेजती है।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

ज्यादातर वेश्याएँ पैसे निकालना जानती हैं और आदमी को हर वक्त अपनी तरफ खींचने का प्रयत्न करती रहती हैं। जो कमलाबाई नहीं करती।

मिश्र जी ने कम्मो जैसी एक असाधारण वेश्या का वर्णन किया है जो आम वेश्याओं जैसी नहीं है। वह एक अनुशासन से रहती है । वेश्या होने की स्वतंत्रता का उसने कभी फायदा नहीं उठाया।

मिश्र जी ने समाज जीवन की विशेषताओं को सूक्ष्म तरिके से जाँचकर उन्हें पाठकों के सामने रखा है। इस तरह एक-एक विशेषता अपना अलग अस्तित्व समाज में रखती है। जो समाज जीवन का मुख्य भाग है।

निष्कर्ष :-

गोविंद मिश्र एक सजग रचनाकार है। उन्होंने समाज का कोना-कोना छानकर उसका यथार्थ वर्णन कर समाज जीवन की विशेषता को प्रस्तुत किया है।

आधुनिक काल में भारतीय संस्कृति के द्योतक संयुक्त परिवार अधिक मात्रा में नहीं दिखाई देते। फिर भी 'पाँच आँगनोवाला घर' की जोगेश्वरी देवी के परिवार जैसा संयुक्त परिवार ढूँढ़कर भी नहीं मिलेगा। क्योंकि उस परिवार में छोटों से लेकर बड़ों तक की सब की जरूरतें पूरी की जाती हैं। अत: एक दूसरे के प्रति आत्मीय भाव उनमें दिखाई देता हैं। मुशायरा, दावतें, कवि संम्मेलन त्यौहार आदि सांस्कृतिक वातावरण परिवार को घेरे हुआ है। 'लाल पीली जमीन' का जादव जी का परिवार भी संयुक्त है, जो मुहल्ले का प्रतिष्ठित संस्कृतिप्रिय परिवार हैं। परिवार में प्रेम हो तो देश के लिए प्रेम जरूर होता है। 'पाँच आँगनेवाला घर' के राधेलाल अपना घर छोड़कर देश की सेवा के लिए सुराजी बन जाता है। देशप्रेम के खातिर जेल में जाता है और आखिर इसी दौड़-धूप में उसकी मृत्यु हो जाती है। गोवर्धन चाचा तथा रामधार भी गांधी के अनुसार चलकर देश को स्वतंत्र करने का प्रयत्न करते हैं। सन 1940 ई. का भारतीय स्वतंत्रता के लिए प्रांतीय स्टुडैट्स फेडरेशन का संघर्ष तथा बनारस हिंदू युनिवर्सिटी के छात्रांदोलन से अंग्रेज सरकार भी छात्रों पर गोलियाँ चलाकर हत्या करती हैं। इस तरह देशप्रेमी अपने प्राणों की बली चढ़ाकर देश को स्वतंत्र करने का प्रयत्न करते हैं जो सफल होता है। इस तरह मिश्र जी ने देशप्रेमी लोगों को समाज की विशेषता बनाकर प्रस्तुत किया है।

जिसके मन में देशप्रेम हो वह अपने देश की संस्कृति कैसे भूल सकता है, जैसे 'लाल पीली जमीन' उपन्यास में स्थित खांदिया मुहल्ले के लोग होली, नौरता, दशहरा, दिवाली आदि कई त्यौहार उत्साह से मनाते हैं। उस वक्त अपनी दुश्मनी भुलकर त्यौहारों का आनंद उठाते हैं। 'तुम्हारी रोशनी में' की सुवर्णा भी जन्मदिन मनाती है। इस तरह शहरों की संस्कृति कुछ अलग है। 'वह अपना चेहरा' की रचना, शुक्ला, केशवदास, उसकी पत्नी आदि लोग कलाप्रेमी हैं। जो दिल्ली जैसे सांस्कृतिक शहर को पाकर खुश है, क्योंकि वहाँ उन्हें सांस्कृतिक कार्यक्रम की मौज लुटने मिलती है। 'पाँच आँगनोवाला घर' उपन्यास में स्वतंत्रतापूर्व संस्कृतिप्रिय

समाज को दिखाया है। जिसमें जोगेश्वरीदेवी का परिवार मुशायरा, संक्रांति, दावतें, कवि सम्मेलन, कार्तिक स्नान आदि सब संस्कृति को बढ़ावा देनेवाला कार्यक्रम है। जिसके कारण शादी ब्याह में उत्साह, बारात आदि के साथ विवाह संपन्न किए जाते हैं। कुछ विद्रोही वृत्ति के लोग समाज में अशांति का वातावरण फैलाते हैं। 'लाल पीली जमीन' का छात्रांदोलन, सुरेश कल्लू का आतंक तथा शन्नो का विद्रोह कस्बाई विद्रोह स्पष्ट करता है। 'तुम्हारी रोशनी में' की सुवर्णा पुरूष समानाधिकार की माँग कर शहरी विद्रोही नारी के प्रतिनिधि के रूप में हमारे सामने खड़ी होती है। 'पाँच आँगनोवाला घर' मे आज़ादी के लिए छात्र बड़े-बड़े नेतागण विद्रोह का ही सहारा लेते हैं। तो छोटू जैसे नवजवान शराबी बनकर, विद्रोह प्रकट करते हैं,और बरबाद हो जाते हैं। तो कभी भ्रष्ट राजनेता की वजह से छात्र आंदोलन का मार्ग अपना कर देश में विद्रोह फैलाते हैं। मिश्र जी के उपन्यास की आत्मा विद्रोही समाज की वृत्ति है।

आज समाज में नारी का अपना एक अलग स्थान बन रहा है। जैसे 'वह अपना चेहरा' उपन्यास की रचना समाज की कड़ुवी बातों को अनसुना कर किसी भी दौड़ में हमेशा आगे रहनेवाली नारी का प्रतिनिधित्त्व करती हैं। 'पाँच आँगनोवाला घर' की जोगेश्वरी देवी विधवा होकर भी अपने आत्मविश्वास के बलपर एक कुशल मैनेजर की तरह परिवार को चलाती है। पहाड़ की तरह घर पर आए हर तूफ़ान का सामना करती है। यहाँ तक की बेटे की विधि संस्कार की भी व्यवस्था करती है , जो आज तक शायद किसी माँ ने ऐसा नहीं किया होगा। वह एक बड़ा वृक्ष बनकर परिवार को शितल छाया देती है। इस तरह मिश्र जी नारी को यथार्थ रूप में वर्णित करते हैं।

आज का युवावर्ग महत्त्वाकांक्षी बनकर अपनी तथा देश की प्रगति कर रहा है। 'वह अपना चेहरा' की रेश्मा अफ़सर के रूप में अपने व्यक्तित्त्व को बनाना चाहती है। तो 'लाल पीली जमीन' की शांति पिता मरने के बाद घर का बोझ खुद उठाती है ओर शैलजा भी अपनी पढ़ाई जोश के साथ करती है। मिश्र जी यह कहना चाहते हैं कि शहरी कस्बाई लड़कियाँ अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को लेकर आज आगे बढ़ रही हैं। केशव, कैलाश जैसे लड़कों को अच्छे मास्टरों का मार्गदर्शन मिलने से वे डटकर मेहनत कर आगे अपने परिवार का बोझ सँभालने के लिए खुद को तैयार कर रहे हैं। देश को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त करना एक महत्त्वाकांक्षा ही है। 'पाँच आँगनोवाला घर' उपन्यास के हिंदू युनिवर्सिटी के छात्रों का संघर्ष, स्वतंत्रता प्राप्त करने की महत्त्वाकांक्षा रखता है। यदि महत्त्वाकांक्षा के बीच अगर कोई कठिनाई पैदा हो तो युवा छात्रांदोलन करते हैं। जैसे सन 1990 ई. में जातीय आरक्षण के विरूद्ध संघर्ष करना। अत: बंटू जैसा युवक विदेश जाने की महत्त्वाकांक्षा पूर्ण करने के लिए अमेरिकन लड़की ऐलिस से शादी करता है और अमेरिका जाता है। इस तरह आज के महत्त्वाकांक्षी युवक परिस्थिति से समझौता कर अपनी महत्त्वाकांक्षा को पूर्ण करने का प्रयत्न करते हैं।

समलिंगी आकर्षण जैसी भयावह वृत्ति को मिश्र जी ने 'लाल पीली जमीन' उपन्यास के स्कूली नवयुवकों में दिखाया हैं। बच्चों को वहाँ के मास्टर पीटकर यह वृत्ति खत्म करने का प्रयत्न करते हैं जो गलत है। बच्चों की ऐसी वृत्ति के मूल कारणों की खोज करना आवश्यक है जैसे केशव तथा कमलाबाई का अकेलापन।

इस तरह मनोविज्ञान के कारण ही आज ऐसी वृत्ति बढ़ रही है।

मिश्र जी के उपन्यासों की एक विशेषता और है कि उन्होंने समाज के वेश्या का वात्सल्य रूप भी दर्शाया है - जैसे 'पाँच आँगनोवाला घर' उपन्यास की वेश्या कमलाबाई जो मुंशी राधेलाल के परिवार की आर्थिक रूप से मदद करती है। उसके जमाई को अपना बेटा समझकर सीधा रास्ता दिखाकर अपनी वात्सल्यता प्रकट करती है। इस तरह की वेश्या आज कम मात्रा में मिलती है। ऐसी वेश्याएँ समाज के लिए एक नई मिसाल खड़ी करती हैं।

इस प्रकार मिश्र जी समाज जीवन की विशेषताओं को ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने में राफल हुए हैं।

संदर्भ-संकेत

1. गोविंद मिश्र, पाँच आँगनोंवाला घर, पृ. 78
2. वही, पृ. 34
3. वही, लाल पीली जमीन, पृ. 32
4. वही, पाँच आँगनोंवाला घर, पृ. 258
5. वही, लाल पीली जमीन, पृ. 291
6. वही, वह अपना चेहरा, पृ. 37
7. वही, लाल पीली जमीन,पृ. 146
8. वही, पृ. 68
9. वही, तुम्हारी रोशनी में, पृ. 36
10. वही, पाँच आँगनोवाला घर, पृ. 87
11. वही, लाल पीली जमीन, पृ. 37
12. वही, पृ. 71
13. वही, पाँच आँगनोवाला घर, पृ. 69
14. वही, पृ. 41
15. वही, पृ. 67